



NURVI-02





NURVI-02





2005





2004



ॐ कात्यायनी महामातै महायोगिनी श्रीं ।
 रन्द गोपसुतै देवि प्रति मे क
 ॐ मे शोकस्य सकल ज
 विदस माय पुरुषार्थ धार
 प्रति मे देहि कस-कस
 महत्तम धार
 महत्तम पु
 हे गी
 मा क
 ॐ देवेन्द्राणि
 विवाह भ

ॐ हे दूसरथ अजर बिहारी
 होइ यही जो राम रच रामा
 को करे सरफ बढाए सखा
 धीरज धरम मिल अरु नारी
 आपद काल परशिये चारी
 जेहि के जेहि पर सत्य सनेह
 सो जेहि मिलव न कछु सनेह
 जाकी रहो भावना जैसी
 प्रभु भूति देखी तिन तैसी
 हरि अनन्त हरि कथा अनन्त
 कहहि सुनिह बहुविधि दब सता
 रपूकल रीत सदा चली आई
 प्राण जाप पर खचन न जाई
 राम सिधा राम खिक राम
 जय जय राम







ॐ श्री गणेशाय नमः
ॐ श्री लक्ष्मणाय नमः
ॐ श्री रामाय नमः
ॐ श्री हनुमत्पुत्राय नमः
ॐ श्री श्रीगणेशाय नमः
ॐ श्री श्रीलक्ष्मणाय नमः
ॐ श्री श्रीरामाय नमः
ॐ श्री श्रीहनुमत्पुत्राय नमः
ॐ श्री श्रीगणेशाय नमः
ॐ श्री श्रीलक्ष्मणाय नमः
ॐ श्री श्रीरामाय नमः
ॐ श्री श्रीहनुमत्पुत्राय नमः





2001



2002



2003



2004



2005



2006